International Journal in Management and Social Science
Volume 09 Issue 10, October 2021 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 6.319
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

शक्षा के उभरते स्वरुप में स्वामी ववेकानंद के शै क्षणक वचारों का अध्ययन

नेहा वर्मा[1], डॉ. छत्रसाल सिंह[2],

[1]शोधार्थी ,डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय , फैज़ाबाद उत्तर प्रदेश

[2]असोसिएट प्रोफेसर , शिक्षा शास्त्र विभाग , जवाहर लाल नेहरू पी. जी. कॉलेज बाराबंकी , उत्तर प्रदेश

सारांश

ववेकानन्द शक्षा के माध्यम से बालक में जीवन संघर्ष की तैयारी, चरित्र निर्माण, देश प्रेम, वश्व बन्धुत्व और आत्म अनुभूति के उद्देश्यों की पूर्ति चाहते थे। आज वर्तमान परिपेक्ष्य में हम देखें तो यह सभी उद्देश्य समसामायिक बने स्वामी ववेकानन्द ने अपने जीवन में शक्षा दर्शन का कार्य कया और उनका यह दृढ़ वचार था क सर्फ ज्ञान की जानकारी शक्षा नहीं है वस्तुतः शक्षा प्रायो गक जीवन के संघर्ष की तैयारी है और उसमें चरित्र का वकास एक प्रमुख आयाम है। उनकी शक्षा की परिभाषा- ''व्यक्ति के अन्तर्निहित क्षमताओ की अ भव्यक्ति ही शक्षा है"' गहरा सार लए हुए थी। वह वेदान्त दर्शन के मानने वाले थे और उनकी आस्था थी क हर छात्र में उस परमात्मा का अंश है और सभी में कुछ न कुछ सम्भावनाएँ है ज़रूरत उसको पहचानकर उसे वक सत करना है। ववेकानन्द शक्षा के माध्यम से बालक में जीवन संघर्ष की तैयारी, चरित्र निर्माण, देश प्रेम, वश्व बन्धुत्व और आत्म अनुभूति के उद्देश्यों की पूर्ति चाहते थे। आज वर्तमान परिपेक्ष्य में हम देखें तो यह सभी उद्देश्य समसामायिक बने हुए हैं, वास्तव में वर्तमान की वैश्विक परस्थितियाँ शक्षा के इन्हीं उद्देश्यों की तरफ हमें ले जाने के लए प्रेरित करती है। ववेकानन्द शक्षण व ध में भी प्रायो गक और कर के सीखने की बात करते हैं जिस पर वर्तमान में बहुत अनुसंधान और चंतन हो रहा है और एनसीएफ 2005 ने बाल केन्द्रित व धयों का प्रस्ताव रखा है। साथ ही ववेकानन्द आध्यात्म और वज्ञान के समन्वयन की बात भी करते हैं और जीवन में आध्यात्म को केन्द्र में मानते हैं। इसी के माध्यम से देश और वश्व में शांति की स्थापना सम्भव है। ववेकानन्द छात्रों में प्रथम गुण शक्षक के प्रति श्रद्धा को मानते हैं और इस तत्व की आवश्यकता शक्षण प्र क्रया को आधार मानते हैं। ववेकानन्द युवाओं में अनन्त साहस और शक्ति के केन्द्र की बात करते हुए समाज निर्माण का आधार युवाओं के सही मार्गदर्शन और निडरता को मानते हैं। उनके इसी वश्वास के कारण आज का दिन हम कैरियर दिवस के रूप में मनाते हैं और व भन्न शक्षण संस्थाओं मे आज युवाओं के मार्गदर्शन हेतु कैरियर से सम्बन्धित

चर्चाओं, प्रतियो गताओं, प्रदर्शनियों आदि का आयोजन कया जाता है। वास्तव में यदि वर्तमान शै क्षणक परिदृश्य में देश का युवा ववेकानन्द के शक्षा दर्शन अनुसार मार्गदर्शन प्राप्त कर ले तो देश वकास अवश्यमभावी होगा और वश्वबंधुत्व की स्थापना हो सकेगी।

मुख्यशब्द:- शक्षा के उभरते स्वरुप, स्वामी ववेकानंद, शै क्षणक परिप्रेक्ष्य

प्रस्तावना

हमारे देश का गौरव बढ़ाने में बहुत से महापुरुषों ने सहयोग कया है, जिसके कारण ही भारत को वश्व गुरु की संज्ञा दी जाती है, इन महापुरुषों के वचार सुन कर हमे जीवन में मार्गदर्शन प्राप्त होता है और हम सही मार्ग पर चलने लगते है, यह वचार हमारे लए एक प्रकाश स्तम्भ का कार्य करते है, जो सम्पूर्ण वश्व में भारत की कीर्ति को स्था पत करते है, इस पेज पर हम ऐसे ही महापुरुष के वषय में जानकारी प्रदान करने जा रहे है, जिन्होंने अपनी तेजस्व वाणी से अमेरिका के शकागो की धरती पर एक ज्ञान का स्तम्भ खड़ा कया है, लाखों भारतीयों के ह्रदय स्थल को छूने वाले आदरणीय स्वामी ववेकानंद के शक्षा के संबंध में क्या महान वचार थे ? आईये जानते है, उनके अदभुत वचारो को |

स्वामी ववेकानन्द भारत के बहुमूल्य रत्न एक जी वत क्रांति के मशाल थे, एक व्यक्ति नही एक चमत्कार थे। आज से प्रायः एक सदी पहले पराधीन और पदद लत भारत के जिस एकाकी और अं कचन योद्धा संयासी ने हजारों मील दूर वदेश में नितांत अपरि चतों के बीच अपनी ओजमयी वाणी में भारतीय धर्म साधना के चरंतन सत्यों का जयघोष कया। स्वामी ववेकानन्द सामायिक भारत में उन कुशल शल्पियों में है ं जिन्होने आधाराभूत भारतीय जीवन मूल्यों की आधुनिक अंतराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में ववेक संगत व्याख्या की। स्वामी ववेकानन्द के जीवन कोश में भारतीय नव निर्माण के उर्वर बीच यत्नपूर्वक संक लत है ही, उसमें पी ड़त और जर्जरित मानवता के पुनर्सृजन की कार्यात्मक कार्यसाधन योजना भी सम्मि लत है।

भारत के लए स्वामी जी के वचार चंतन और संदेश प्रत्येक भारतीय के लए अमूल्य धरोहर है तथा उनके जीवन शैली और आदर्श प्रत्यके युवा पीढ़ी के लए प्रेरणास्त्रोत हैं। स्वामी ववेकानंद ने अपने जीवन का प्रवाधान लक्ष्य भारत के स्वामी जी भारतीय संस्कृति शक्षा तथा धर्म के

समग्रता के संबंध ने आज हमारे सामने वशेषकर युवा पीढ़ी के लए यह आह्नवान क "मानव स्वाभाव गौरव को कभी मत भूलो । हममें से प्रत्येक व्यक्ति यह घोषणा करें क मैं ही ईश्वर हूँ जिससे बड़ा कोई न हुआ है और न ही होगा। उनके वचारानुसार शक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना मात्र नही है अ पतु उसका लक्ष्य जीवन चरित्र और मानव का निर्माण करना होता है। चूं क वर्तमान शक्षा उन तत्वोंसे युक्त नही है अतः वह श्रेष्ठ शक्षा नही है। वे शक्षा के वर्तमान रूप को अभावात्मक बताते थे जिसमें वद्या र्थयों को अपनी संस्कृति का ज्ञान नही होता। भारत की गुरू शष्य परंपरा जिसमें वद्या र्थयों तथा शक्षकों में निकटता के संबंध नया संपर्क रह सकें तथा वद्या र्थयों में प वत्रता ज्ञान, धैर्य, वश्वास, वनम्रता आदि के श्रेष्ठ गुणों का वकास हो सके। वे धर्म के संबंध में कसी एक धर्म को प्राथ मकता नही देते थे, स्वामी जी मानव धर्म के प्रति दृढ़ प्रतिज्ञ थे। उन्होने धा र्मक संकीर्णता से ऊपर उठते हुए यह घोषणा की प्रत्येक धर्म, सम्प्रदाय जिस भाव में ईश्वर की आराधना करता है, मैं उनमे से प्रत्येक यके साथ ठीक उसी भाव से आराधन करूंगा। स्वामी जी के अनुसार बाईबिल, वेद, गीता, कुरान तथा अन्य धर्मग्रंथ समूह मानों ईश्वर के पुस्तक में के एक-एक पृष्ठ है। वे प्रत्येक धर्म को महत्व देते थे तथा उनके सारभूत तत्वों को जो मानव जीवन को उनका चरित्र तथा ज्योति प्रदान करने में सक्षम हो को अपनाने का आहवान करते थे जिसे एक नाम दिया गया "सर्व धर्म सम्भाव"। उन्होंने प्रत्येक धर्म के वषय में कहा क कोई व्यक्ति जन्म से हिन्दू, ईसाई, मुस्लिम, सक्ख या अन्य धर्म के नहीं होते। उनके अपने माता पाता, पूर्वज जिस संस्कृतिक संस्कार या परंपर से जुड़े रहते है। वे उसे सीखते और आज्ञा पालन करने वाले होते है ं।

मानव से बढ़कर और कोई सेवा श्रेष्ठ नही है और यहीं से शुरू होता है वास्त वक मानव की जीवन यात्रा। हमें आज आवश्यकता है स्वामी जी के आदर्शों पर चलने हेतु दृढ़ प्रतिज्ञ होने, उनके शक्षा वचार संदेश तथा दर्शन को साकार रूप में अपना लेने की। स्वामी जी के जीवन शैली को आत्मसात करके जन जन में एकता प्रेम और दया की नदियाँ बहाकर नए युक की शुरूआत करने की। तो आईये जाति, धर्म, सम्प्रदाय, पंथ और अन्य संकीर्ण मान सकता से ऊपर उठकर एक दूसरे का हाथ थामकर माँ भारती को समृ द्ध, वकास और उपलब्धि की ओर ले जाए।

स्वामी ववेकानंद जी के शक्षा के संबंध में वचार

स्वामी ववेकानंद जी के शक्षा के संबंध में वचार इस प्रकार है-

भारत की वर्तमान और भ वष्य में आने वाली परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुये हमें अपनी वर्तमान शक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण परिवर्तन करने की अति आवश्यकता है, हमें ऐसी वर्तमान शक्षा की आवश्यकता है, जो समय के अनुकूल हो, हमारी दुर्दशा का मूल कारण, नकारात्मक शक्षा प्रणाली है |

वर्तमान शक्षा प्रणाली केवल क्लर्क पैदा करने की मशीनरी मात्र है, यदि केवल यह इसी प्रकार की होती है तो भी मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ

इस दू षत शक्षा प्रणाली के माध्यम से श क्षत भारतीय युवा पता, पूर्वजों, इतिहास एवं अपनी संस्कृति से घृणा करना सीखता है, वह अपने प वत्र वेदों, प वत्र गीता को झूठा समझने लगता है, इस प्रकार की शक्षा प्रणाली के द्वारा तैयार हुए युवा अपने अतीत, अपनी संस्कृति पर गौरव करने के बदले इन सब से घृणा करने लगता है और वदे शयों की नकल करने में ही गौरव की अनुभूति करता है, इस शक्षा प्रणाली के द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में कोई भी सहयोग प्राप्त नहीं हो रहा है |

ऐसी शक्षा का क्या महत्व है, जो हम भारतीय को सदैव परतंत्रता का मार्ग दिखाती है, जो हमारे गौरव, स्वावलंबन एवं आत्म- वश्वास का क्षरण करती है |

स्वामी ववेकानंद जी के प्रमुख वचार

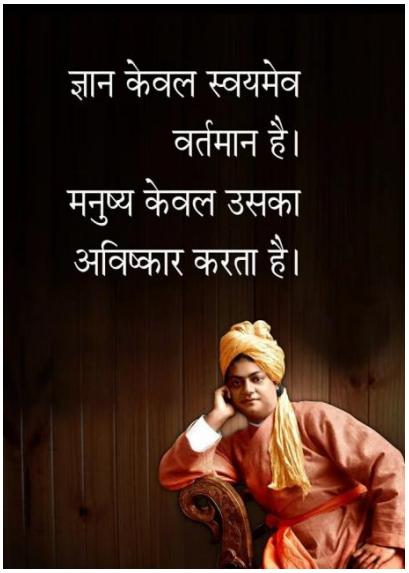

1.पढ़ने के लए जरूरी है एकाग्रता, एकाग्रता के लए जरूरी है ध्यान, ध्यान से ही हम इन्द्रियों पर संयम रखकर एकाग्रता प्राप्त कर सकते है |

2.ज्ञान स्वयं में वर्तमान है, मनुष्य केवल उसका आ वष्कार करता है |

3.उठो और जागो और तब तक रुको नहीं जब तक क तमु अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लेते |

4.जब तक जीना, तब तक सीखना, अनुभव ही जगत में सर्वश्रेष्ठ शक्षक है |

5.प वत्रता, धैर्य और उद्यम- ये तीनों गुण मैं एक साथ चाहता हूं |

6.लोग तुम्हारी स्तुति करें या निन्दा, लक्ष्य तुम्हारे ऊपर कृपालु हो या न हो, तुम्हारा देहांत आज हो या युग में, तुम न्यायपथ से कभी भ्रष्ट न हो |

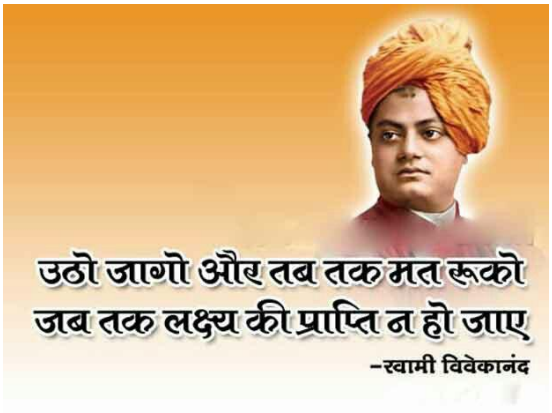

7.जिस समय जिस काम के लए प्रतिज्ञा करो, ठीक उसी समय पर उसे करना ही चाहिये, नहीं तो लोगो का वश्वास उठ जाता है |

8.जब तक आप खुद पे वश्वास नहीं करते तब तक आप भागवान पर वश्वास नहीं कर सकते |

9.एक समय में एक काम करो, और ऐसा करते समय अपनी पूरी आत्मा उसमे डाल दो और बाकी सब कुछ भूल जाओ |

10.जितना बड़ा संघर्ष होगा जीत उतनी ही शानदार होगी |

स्वामी ववेकानन्द की शै क्षक वचारों की वशेषताएँ

स्वामी ववेकानन्द जी ने मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णतः की अ भव्यक्ति को शक्षा माना है। स्वामी जी के अनुसार, शक्षा जीवन संघर्ष की तैयारी है क्यों क जो शक्षा जीवन जीने की कला नहीं सखाती जीवन को सम- वषय परिस्थितियों में अनुकूल आचरण करना नहीं सखाती वह शक्षा व्यर्थ है।

स्वामी ववेकानन्द के शै क्षक वचारों की प्रमुख वशेषताएँ निम्नवत् हैं-

1. स्वामी ववेकानन्द के अनुसार, अध्यापक का चरित्र अत्यन्त उच्च कोटि का होना चाहिए।

2. स्वामी ववेकानन्द के अनुसार, अध्यापक को वषय का ज्ञाता तो होना ही चाहिए साथ ही उसके अन्दर प्रेम, सहानुभूति, त्याग, निष्पक्षता की भावना का होना आवश्यक है।
3. वद्या र्थयों के सम्बन्ध में स्वामी ववेकानन्द का वचार था क अपने आपको पहचानो ज्ञान तो आपके अन्दर है उसे बाहर निकालो अपनी अन्तरात्मा को चेतन करो बिना इस सबकी बाह्य शक्षण व्यर्थ है।
4. स्वामी ववेकानन्द ने परोपकार तथा समाज सेवा को सर्वोपरि मानते हुए कहा है क नर सेवा ही नारायण सेवा है।
5. स्वामी ववेकानन्द ने दमनात्मक अनुशासन का वरोध करके प्रभावात्मक अनुशासन पर बल दिया है।
6. स्वामी ववेकानन्द ने आध्यात्मिक उन्नति के साथ ही लौ कक समृ द्ध को भी आवश्यक माना है। यही कारण है क उन्होंने पाठ्यक्रम में आध्यात्मिक वषयों के साथ-साथ लौ कक वषयों को भी समावे शत कया है।
7. स्वामी ववेकानन्द ने मन की एकाग्रता पर वशेष जोर दिया है क्यों क मन को एकाग्र कए बिना कसी भी शक्षण व ध का प्रभाव स्वतः न्यून होता जाता है। यद्य प उन्होंने अनुकरण व ध, वचार- वमर्श, उपदेश, परामर्थ वैयक्तिक निर्देशन व धयों को भी शक्षण व ध के रूप में बताया है।
8. स्वामी ववेकानन्द ने स्त्री को पुरुषों के समान स्थान देते हुए कहा है क जिस देश में स्त्रियों का सम्मान व आदर नहीं होता वह देश कभी भी प्रगति नहीं कर सकता। स्त्रियों के उत्थान के सम्बन्ध में स्वामी जी ने कहा था क- "पहले अपनी स्त्रियों को श क्षत करो तब वे बताएँगी क उनके लए कौन-कौन से सुधार करने आवश्यक हैं। "

आधुनिक नेतृत्व की अवधारणा:

ववेकानंद ने बार-बार और नि र्ववाद रूप से निदान कया क दुनिया की बुनियादी कमी आ र्थक, सांस्कृतिक या राजनीतिक नहीं है, बल्कि मनुष्य की भलाई है, और ठीक ही तर्क दिया है क कसी संगठन की सफलता मुख्य रूप से उसके संवैधानिक कानूनों और समझौतों पर नहीं बल्कि ईमानदारी पर निर्भर करती है। , आत्म-ब लदान, और इसके व्यक्तिगत सदस्यों का उत्साह। ववेकानंद के लए, सभी के लए पूरे दिल से प्यार के साथ एक शुद्ध पारदर्शी दिमाग, आदर्श

नेतृत्व का आधार है। ववेकानंद की नेतृत्व शैली की एक अन्य प्रमुख वशेषता निम्नतर आत्म या 'अपंग अहंकार' का वलोपन है। ववेकानंद ने अपने जीवन में नौकर-नेतृत्व की उदात्त अवधारणा का प्रचार और अभ्यास कया और अस्सी साल पहले इसे कॉर्पोरेट जगत में पेश कया गया था और आधुनिक समय में नेतृत्व की अवधारणा की सबसे शक्तिशाली कला के रूप में प्रशं सत कया गया था। "आपको एक नेता के रूप में नहीं, बल्कि एक नौकर के रूप में पूरे आंदोलन की कमान संभालनी होगी।" (ववेकानंद, **1989**, खंड **5**, पृ.**41)**, ववेकानंद ने अवलोकन कया। शै क्षक परिप्रेक्ष्य में आधुनिक नेतृत्व प्रतिमान के संदर्भ में, एक प्रभावी शक्षक की भू मका लेन-देन के साथ-साथ परिवर्तनकारी नेतृत्व शैली दोनों को आंतरिक बनाने की होगी, जो न केवल अकाद मक और समस्या समाधान प्रवचन के भीतर ही सी मत होगा, बल्कि जो एक साझा साझाकरण को प्रेरित करेगा, उसका निर्माण करेगा। शक्षा र्थयों के बीच रचनात्मक आवेग। एक सफल नेता बनने के लए व्यक्ति को अपने आप को समुदाय के पैरों तले कुचल देना चाहिए। ववेकानंद ने मानवता के सामने उभरती समस्याओं को समझा। यह कारण और प्रभाव व ध है जिसके द्वारा उन्होंने समस्याओं का पता लगाया और समाधान प्रदान कया। ववेकानंद ने मूल्य आधारित प्रबंधन के बारे में राय दी। व लयम हिट ने अपनी पुस्तक 'द लीडर-मैनेजर' में चार बुनियादी लक्षणों का उल्लेख कया है जो सभी नेताओं में दिखाई देते हैं:

1. नेताओं के पास संगठन के लए स्पष्ट दृष्टि है।

2. नेताओं के पास अपनी दृष्टि को दूसरों तक पहुंचाने की क्षमता होती है जो सर्फ एक अच्छे वचार के बजाय एक कॉ लंग की तरह है।

3. नेताओं में दृष्टि की दिशा में काम करने के लए दूसरों को प्रेरित करने की क्षमता होती है।

4. नेताओं के पास काम करने के लए सस्टम को काम करने की क्षमता है। कहने की जरूरत नहीं है क ववेकानंद में चारों लक्षण स्पष्ट थे।

नागरिकता शक्षा:

नागरिकता शक्षा की आधुनिक अवधारणा के दो दृष्टिकोण हैं: एक व्यक्ति अपने ही देश का नागरिक होता है जहाँ देशभक्ति एक मुख्य वषयवस्तु है। एक व्यक्ति भी एक वैश्विक नागरिक है। ववेकानंद ने इन दोनों अवधारणाओं को अपने तरीके से म श्रत कया है। उन्होंने जोर देकर कहा: "भारत के लए अपने पूरे प्यार के साथ, और अपनी देशभक्ति और पूर्वजों के प्रति श्रद्धा के साथ, मैं यह नहीं सोच सकता क हमें अन्य देशों से बहुत कुछ सीखना है"। नागरिकता शक्षा की अवधारणा को भ वष्य के नागरिकों को एक नागरिक समाज के ढांचे में ढालना चाहिए जहां नागरिक अपने अ धकारों के बारे में जागरूक हों, लोकतांत्रिक आदर्शों का सम्मान करें और साझा जिम्मेदारी के साथ कल्याणकारी समाज के लए काम करें। लोकतांत्रिक नागरिकता के लए शक्षा प्रथाओं और गति व धयों का एक समूह है जिसका उद्देश्य युवा लोगों और वयस्कों को समाज में अपने अ धकारों और जिम्मेदारियों को ग्रहण और प्रयोग करके लोकतांत्रिक जीवन में स क्रय रूप से भाग लेने के लए बेहतर ढंग से सुसज्जित करना है। 'लर्निंग : द ट्रेजर इन' (1996) में उल्लि खत व भन्न प्रकार के संकटों से निपटने के लए, वैश्विक शक्षा की अवधारणा ने कुछ आयामों का सुझाव दिया है, जैसे, आत्म-खोज, पूछताछ, स्थिरता, नवाचार, संचार, सहानुभूति आदि। वैश्विक नागरिकता शक्षा (जीसीई) एक गहन समझ को संद र्भत करता है क हम सभी वैश्विक समुदाय के नागरिकों के रूप में एक साथ बंधे हैं। हमारी आशाएं, सपने, चुनौतियां सभी आपस में जुड़ी हुई हैं। जीसीई में तीन मुख्य वैचारिक आयाम शा मल हैं: संज्ञानात्मक, सामाजिक-भावनात्मक और व्यवहारिक जो शक्षा र्थयों को एक अ धक समावेशी, न्यायपूर्ण और शांतिपूर्ण दुनिया में योगदान करने में सक्षम होने की आवश्यकता है।

शक्षा और ववेकानंद का अंतर्राष्ट्रीय पहलू:

आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोणों के संदर्भ में शक्षा के दर्शन और ववेकानंद की उभरती वरासत में वचारों का एक घनिष्ठ संबंध है, कभी प्रत्यक्ष तो कभी परोक्ष रूप से। आत्मा की मुक्ति और शक्षा के माध्यम से लंबे समय से खोई हुई मानवता का उत्थान उनकी एकमात्र प्राथ मकता है। उनका शक्षा का एक दर्शन है जो न केवल अपनी प्रकृति से पुनर्योजी है, बल्कि यूनेस्को और अन्य संगठनों द्वारा पेश कए गए कई प्रस्तावों और सफारिशों के समान है। ववेकानंद का

जीवन और मशन भौतिक प्रगति के आधुनिक अर्थों में मानव महिमा का एक प्रतीक है जो मनुष्य को उसकी सर्वोच्च स्थिति में पुनर्स्था पत करता है। ववेकानंद ने अपना जीवन मानव उत्कृष्टता की महान दृष्टि में आधुनिक मानवता को श क्षत करने के लए बिताया। उन्हें वास्तव में एक वैश्विक नागरिक के मॉडल के रूप में माना जाना चाहिए, शायद वह पहला व्यक्ति जिसने वैश्विक होने के सही अर्थ का वर्णन कया, यानी सर्वदेशीयता और उच्चतम क्रम की राजनेता। **10** दिसंबर **1948** के महासभा संकल्प **217**ए (III) द्वारा स्वीकृत और घो षत मानवा धकारों की सार्वभौ मक घोषणा की प्रस्तावना नीचे दी गई है: प्रस्तावना: "जब क मानव परिवार के सभी सदस्यों की अंतर्निहित गरिमा और समान और अयोग्य अ धकारों की मान्यता दुनिया में स्वतंत्रता, न्याय और शांति की नींव है।

जब क मानवा धकारों की अवहेलना और अवमानना के परिणामस्वरूप बर्बर कार्य हुए हैं, जिन्होंने मानव जाति की अंतरात्मा को ठेस पहुँचाई है, और एक ऐसी दुनिया का आगमन जिसमें मनुष्य को भाषण और वश्वास की स्वतंत्रता और भय और अभाव से मुक्ति का आनंद मलेगा, को सर्वोच्च घो षत कया गया है। आम लोगों की आकांक्षा। जब क यह आवश्यक है क यदि मनुष्य को अत्याचार और उत्पीड़न के खलाफ अंतिम उपाय के रूप में वद्रोह का सहारा लेने के लए मजबूर नहीं कया जाता है, तो कानून के शासन द्वारा मानव अ धकार की रक्षा की जानी चाहिए। जब क राष्ट्रों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों के वकास को बढ़ावा देना आवश्यक है। जब क संयुक्त राष्ट्र के लोगों ने चार्टर में मौ लक मानव अ धकारों, मानव व्यक्ति की गरिमा और मूल्य और पुरुषों और महिलाओं के समान अ धकारों में अपने वश्वास की पुष्टि की है और सामाजिक प्रगति और जीवन के बेहतर मानकों को बढ़ावा देने के लए दृढ़ संकल्प कया है। बड़ी स्वतंत्रता। जब क सदस्य देशों ने संयुक्त राष्ट्र के सहयोग से मानव अ धकारों और मौ लक स्वतंत्रता के लए सार्वभौ मक सम्मान और पालन को बढ़ावा देने के लए खुद को प्राप्त करने का संकल्प लया है। जब क इन अ धकारों और स्वतंत्रताओं की एक सामान्य समझ इस प्रतिज्ञा की पूर्ण प्राप्ति के लए सबसे अ धक महत्व रखती है

इस लए, अब महासभा, मानव अ धकारों की इस सार्वभौ मक घोषणा को सभी लोगों और सभी राष्ट्रों के लए उपलब्धि के एक सामान्य मानक के रूप में घो षत करती है, इस अंत तक क

प्रत्येक व्यक्ति और समाज का प्रत्येक अंग, इस घोषणा को लगातार ध्यान में रखते हुए, शक्षण द्वारा प्रयास करेगा और शक्षा इन अ धकारों और स्वतंत्रताओं के सम्मान को बढ़ावा देने के लए और प्रगतिशील उपायों द्वारा, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय, उनकी सार्वभौ मक और प्रभावी मान्यता और पालन को सुर क्षत करने के लए, दोनों सदस्य राज्यों के लोगों के बीच और उनके अ धकार क्षेत्र के तहत क्षेत्रों के लोगों के बीच। शक्षा, के अनुसार ववेकानंद, स्वयं की वास्त वक प्रकृति की प्राप्ति की सु वधा प्रदान करते हैं। यह मनुष्य को जीवन की सभी चुनौतियों का सामना करने के लए तैयार करता है और अंततः मनुष्य को उच्चतम संभावनाओं के क्षेत्र में ले जाता है। शक्षा के वकास पर अंतर्राष्ट्रीय आयोग ने यूनेस्को को अपनी रिपोर्ट में, 'लर्निंग टू बी': द वर्ल्ड ऑफ़ एजुकेशन टुडे एंड टुमॉरो' **(1972)** एडगर फॉरे की अध्यक्षता में आधुनिक शक्षा के क्षतिज में एक उल्लेखनीय सफलता है। आयोग ने अपना कामकाज ऐसे समय में शुरू कया था, जब तेजी से सामाजिक-सांस्कृतिक और सामाजिक-आ थक बदलाव आकार ले रहे थे। ज्ञान का वस्फोट हो रहा था और मनुष्य की आकांक्षाएं तेजी से बदल रही थीं। परिणामस्वरूप, वश्व शांति, अंतर्राष्ट्रीय बंधुत्व और मूल्य आधारित समझ की माँगें उभर रही थीं। इस लए, लर्निंग टू बी **(1972)** 'एक कालातीत प्राथ मकता' के रूप में उभरता है। **"**एक पूर्ण मनुष्य में व्यक्ति का शारीरिक, बौ द्धक, भावनात्मक और नैतिक एकीकरण, शक्षा के मौ लक उद्देश्य की एक व्यापक परिभाषा है।**"** मानवा धकारों की सार्वभौ मक घोषणा, अनुच्छेद **26 (2)** रिपोर्ट की पृष्ठभू म दर्शन के रूप में प्रस्तुत करता है ; शक्षा को मानव व्यक्तित्व के पूर्ण वकास और मानव अ धकारों और मौ लक स्वतंत्रता के सम्मान को मजबूत करने के लए निर्दे शत कया जाना चाहिए। यह सभी राष्ट्रों, नस्लीय या धा र्मक समूहों के बीच समझ, सहिष्णुता और मत्रता को बढ़ावा देगा और शांति बनाए रखने के लए संयुक्त राष्ट्र की गति व धयों को आगे बढ़ाएगा। रिपोर्ट **(1972)** के अनुसार, शक्षा को व्यक्तिगत और सामाजिक वकास के साथ-साथ शांति और सहिष्णुता, अहिंसा और अंतर्राष्ट्रीय समझ के साधन के रूप में देखा जाना चाहिए। जैसे-जैसे राष्ट्र और शक्षा धीरे-धीरे अ धक से अ धक जुड़ते जा रहे हैं, इस लए शक्षा को प्राथ मकता दी जाती है:

*अन्य लोगों की समझ के रूप में अंतरसांस्कृतिक शक्षा का वकास करना और बहुलवाद, आपसी समझ और शांति के मूल्यों के सम्मान की भावना में अन्योन्या श्रतता की सराहना करना;

* शक्षा के माध्यम से सामाजिक एकता को बढ़ावा देना, नागरिकता शक्षा कार्यक्रमों के वकास के माध्यम से मूल मूल्यों पर जोर देना

निष्कर्ष

स्वामी जी अपने देशवा सयों की अज्ञानता और निर्धनता, इन दो से बहुत चन्तित थे और इसे दूर करने के लए इन्होंने शक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। शक्षण प्र क्रया का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जिस पर स्वामीजी की दृष्टि न पड़ी हो। स्वामी जी का मानना है क ज्ञान मनुष्य में स्वभाव सद्ध है, कोई भी ज्ञान बाहर से नहीं आता, सब अनदर ही है। समस्त ज्ञान चाहे वह लौ कक हो या आध्यात्मिक, मनुष्य के मन में है। इसका आवरण ज्यों-ज्यों हटता जाता है, त्यों-त्यों हमारे ज्ञान की वृ द्ध होती जाती है। जिस व्यक्ति से यह आवरण हट जाता है उसे ज्ञानी और जिस पर यह पड़ा हुआ है उसे अज्ञानी कहते है ं। इसी संदर्भ में स्वामी जी ने कहा क- "मनुष्य की आनतर्निहित पूर्ण ता का े अ भव्यक्त करना ही शक्षा है।"

यदि हम शक्षा सम्बन्धी स्वामी जी के सम्प्रत्यय को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो यह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है क शक्षा मनो वज्ञान के अभ्युदय के पश्चात शक्षा सम्बन्धी जो संकल्पना आज उभर कर आयी है, वह स्वामी जी के वचारों के पूर्णतः अनुकूल है। स्वामीजी ने मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक वकास के लए शक्षा को ज्ञान एवं कौशल के रूप में स्वीकार कया है, इसे ही वर्तमान शक्षा प्रणली में ज्ञान एवं कौशल में ही देखा जा सकता है। आज भी शक्षा अन्तर्निहित शक्ति के रूप में जानी जा रही है। स्वामी जी की शक्षा का आदर्श है-पूर्ण मानव का निर्माण। इस पूर्णता हेतु वे मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के वकास पर समान बल देते थे। इन दोनों प्रकार के वकास के लए स्वमी जी ने शक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण कये। जैसे लौ कक उद्देश्य के अन्तर्गत-व्यक्तित्व, शारीरिक, चारित्रिक, आत्म वश्वास, आत्मरक्षा, मान सक सांस्कृतिक, मानव निर्माण, व्यावसा सक एवं धा र्मक शक्षा के उद्देश्य तथा आध्यात्मिक उद्देश्य। यदि हम स्वामी जी द्वारा बताये गये शक्षा में सभी उद्देश्यों का गहनता से अध्ययन करते है ं तो वर्तमान भारतीय शक्षा में सभी उद्देश्य सम्मि लत हैं। क्यों क सभी शक्षा शास्त्रियों के अनुसार शक्षा का अन्तिम उद्देश्य व्यक्ति का निर्माण करना चाहिए। इस कटौती पर स्वामी जी के शै क्षक उद्देश्य खरे उतरते है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

अहमद, एफ. और गर्ग, एस. **(2015)** 'साइंटि फक ह्यूमनिज्म: रिपोजीशनिंग इं डयन एजुकेशन', वाइवा बुक्स, नई दिल्ली।

अहमद, एफ. और ग्रैग, एस **(2010)** साइंटि फक ह्यूमैनिज्म: रिपोजीशनिंग इं डयन एजुकेशन। नई दिल्ली : चरायु पुस्तकें

बसु, एस. **(2017)** "धा र्मक पुनरुत्थानवाद राष्ट्रवादी प्रवचन के रूप में: स्वामी ववेकानंद और उन्नीसवीं शताब्दी बंगाल में नया हिंदू धर्म", ओयूपी, नई दिल्ली। भजनंदा, एस. **(2016)** यूथ पावर एंड द पावर ऑफ आइ डयाज। मैसूर: श्री रामकृष्ण वद्याशाला।

भुइयां, पीआर **(2018)** स्वामी ववेकानंद: रिसर्जेंट इं डया के मसीहा। नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डस्ट्रीब्यूटर्स।

भुइयां, पीआर **(2018)** "स्वामी ववेकानंद: रिसर्जेंट इं डया के मसीहा", अटलांटिक प्रकाशक और वतरक, नई दिल्ली।

बुधानंद, स्व. **(2015)**, "कैन वन बी साइंटि फक एंड स्टिल स्पिरिचुअल", अद्वैत आश्रम, कोलकाता।

बर्क, एम.एल. (2014) 'स्वामी ववेकानंद: आधुनिक युग के प्रोफेसर', आरकेएमआईसी, कोलकाता।

बर्क, एम.एल. (2016) स्वामी ववेकानंद: आधुनिक युग के पैगंबर कलकत्ता: रामकृष्ण मशन संस्कृति संस्थान।

बर्क, एम.एल. (2016) स्वामी ववेकानंद इन द वेस्ट: न्यू डस्कवरीज। कलकत्ता: अद्वैत आश्रम। **6** खंड।

चक्रवर्ती, एस.के. **(2017)** स्वामी ववेकानंद: प वत्र राष्ट्र के नेता। कोलकाता: अद्वैत आश्रम

च ोपाध्याय, एस.एन. एड. (2016), "स्वामी ववेकानंद: हिज ग्लोबल वजन", पुंठी पुस्तक, कोलकाता।

चौधरी, ए. (2016) ववेकानंद: ए बॉर्न लीडर। कोलकाता: अद्वैत आश्रम।

घोष, एस.पी. (2016) स्वामी ववेकानंद का आ र्थक वचार आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में: भारत एक केस स्टडी के रूप में। कोलकाता: रामकृष्ण मशन इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर

जोन्स, जे. डब्ल्यू. (2017), 'रि लजन एंड साइकोलॉजी इन ट्रांजिशन' येल यूनिव र्सटी प्रेस, यूएसए'

खडसे यू.एम और संह एस. (2016) शक्षा के समकालीन आयामों की तुलना स्वामी ववेकानंद की मानव-निर्माण शक्षा के आयामों से। अंतर्राष्ट्रीय अंतः वषय अनुसंधान जर्नल वॉल्यूम। VI अंक II, ISSN 2249- 9598

लोकेश्वरानंद, स्व. ईडी। (2015), ' चंतनायक ववेकानंद', आरकेएमआईसी, कोलकाता।

महामेधनंद, एस. (एड.) (2016) शक्षा: परिप्रेक्ष्य और व्यवहार। वेदांत केसरी, वॉल्यूम। 103. संख्या 12। आईएसएसएन 0042-2983।

चेन्नई: श्री रामकृष्ण प्रंटिंग प्रेस मजूमदार, ए.के. (2017), 'अंडरस्टैं डंग ववेकानंद', संस्कृत पुस्तक भंडार, कोलकाता।

मजूमदार, आर.सी. (2015), 'स्वामी ववेकानंद: ए हिस्टोरिकल रिव्यू', जनरल प्रंटर्स एंड पब्लिशर्स प्रा।

ल मटेड कोलकाता। मोहंती, जे. (2015) मॉडर्न ट्रेंड्स इन इं डयन एजुकेशन। नई दिल्ली: डीप एंड डीप पब्लिकेशन्स प्रा। ल मटेड मु

खर्जी, के.के. (2017) वश्व के कुछ महान शक्षक। कलकत्ता: दासगुप्ता एंड कंपनी प्रा। ल मटेड

मुखर्जी, जी. (2016) "भारत का एक वैकल्पिक वचार: टैगोर और ववेकानंद", रूटलेज मुखर्जी, एच. (2016), ' ववेकानंद एंड इं डयन फ्रीडम', आरकेएमआईसी, कोलकाता।

मुखर्जी, एस.एल. (2016) द फलॉसफी ऑफ एमओ-मे कंग, न्यू सेंट्रल बुक एजेंसी (पी) ल मटेड, कोलकाता

मुखोपाध्याय, एम (एड) (2018) एक वैश्विक समाज के लए शक्षा: इंटरफेथ आयाम। दिल्ली: शप्रा प्रकाशन

नित्यस्वरुपानंद, एस. (2016) एजुकेशन फॉर ह्यूमन यूनिटी एंड वर्ल्ड स वलाइजेशन। कोलकाता: रामकृष्ण मशन इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर।